पंचम् अध्याय

" 'रातरानी ' नाटक में देश-काल और वातावरण तथा भाषा-शैली "

५.० " 'रातरानी' नाटक में देश-काल और वातावरण तथा भाषा-शैली "

५.१ 'रातरानी' में देश-काल और वातावरण-

देश-काल और वातावरण नाटक का चौथा महत्वपूर्ण मूल तत्व है। " रातरानी " नाटक में स्थित आलोच्य तत्व के औचित्य को देखने से पहले मैं उसके स्वरूप को देखना आवश्यक समझता हूँ।

५.१.१ देश-काल, वातावरण का स्वरूप -

देश-काल, वातावरण के अन्तर्गत स्थान समय और परिस्थिति का विशेष खयाल रखा जाता है। नाटक की विविध घटनाओं उसके विविध पात्रों तथा उनके कार्य-कलाप के साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं को एक पाठक तब सम्भावित या किसी सीमा तक यथार्थ समझता है, जब वह यह देखे कि उसकी पृष्ठभूमि किस सीमा तक देश-काल का सही वातावरण और लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। देश-काल के अन्तर्गत सामान्य रूप से किसी भी देश अथवा समाज की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा समाज की कुरीतियाँ या विशेषताएँ आदि समझी जाती है।

देश काल के अन्तर्गत युग की परिस्थितियाँ और विशिष्ट सन्दर्भ में लिये गये आन्दोलनों आदि की व्यापक भूमिका भी प्रस्तुत की जाती है। डॉ. प्रतापनारायण टण्डन के अनुसार " प्राय: प्रत्येक मानव-समाज में समय के परिवर्तन के साथ-साथ

न्यूनाधिक रूप में विविध क्षेत्रीय नवीनता का अविर्भाव होता रहता है। उसकी पृष्ठभूमि में ही कथा और पात्र जीवन्त बन पड़ते हैं और उनमें पाठक को प्रभावित कर सकने की क्षमता उत्पन्न होती है। भिन्न-भिन्न पात्रों की विचारधारा भी समय-समय पर होने वाले आन्दोलनों से प्रभावित होती है।[1] इससे स्पष्ट है कि पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ तथा साहित्य, नाटक में स्थित घटनाएँ, समस्याएँ आदि को स्पष्ट करते समय देश-काल वातावरण का ख्याल रखना नितांत आवश्यक है। नही तो इस तत्व के बिना रचना हस्यास्पद हो जाएगी। उदाहरण के तौर पर यदि रामायण के पात्र हनुमानजी को यदि पॅन्ट, शर्ट या धोती पहनाई जाय तो वह असंगत बात है। यही पात्र हँसी-मजाक, एक विदुषक के रूप में जाना जाएगा। अत: नाटक में देश-काल और वातावरण का वरण् करना समीचीन होगा।

५.१.२ देश-काल, वातावरण के गुण -

नाटक में देश काल अथवा वातावरण चित्रण के कुछ निश्चित सांकेतिक आधार और गुण हैं, जिनका पालन करना नाटककार के लिए आवश्यक हो जाता है भले ही वह प्राकृतिक सामाजिक अथवा राजनीतिक किसी भी प्रकार की पृष्ठभूमि उपस्थित करना चाहता हो। इन गुणों का समावेश देश-काल अथवा वातावरण के चित्रण को अभिव्यक्तिगत पूर्णता प्रदान करता है। उनसे उसमें विश्वसनीयता भी आ जाती हैं। इसलिए किसी नाट्य कृति में इस त-त्व के अंकन के समय इन गुणों का सतर्क निर्वाह करना आवश्यक है।

---

१. डॅा. प्रतापनारायण टण्डन - हिन्दी उपन्यास कला, पृष्ठ- 300

५.१.२.१ वर्णनात्मक सूक्ष्मता -

इस आधार पर नाटक में देश-काल तथा वातावरण सृष्टि की सफलता का पहला तत्त्व वर्णन की सूक्ष्मता पर निर्भर करता है। स्थूल प्रकृति वर्णन नाट्य रूपी साहित्य-माध्यम में कोई महत्त्व नहीं रखता, यहाँ तक कि विविध वर्णनों के अन्तर्गत की उसकी कोई विशेष उपादेयता सिद्ध नहीं की जा सकती है। यदि कोई नाटककार अपनी रचना में वातावरण का चित्रण करते समय किसी प्रदेश का प्राकृतिक सामाजिक अथवा राजनीतिक वातावरण के चित्रण के अन्तर्गत ऐसे अप्रासंगिक वर्णनों की योजना करता है, जो युग अथवा क्षेत्र की दृष्टि से किसी निश्चित दृष्टिकोण की सूचना नहीं देते, तब उनकी कलात्मकता संदिग्ध हो जाती है। अत: नाटक में देश, काल-वातावरण का ध्यान रखते समय वर्णनात्मक सूक्ष्मता का होना आवश्यक है।

५.१.२.२ विश्वसनीय कल्पनात्मकता -

देश-काल और वातावरण की सृष्टि का दूसरा महत्त्वपूर्ण गुण विश्वसनीय कल्पनात्मकता है। नाटककार एक नये संसार की सृष्टि करता है, लेकिन उस सृष्टि और कथावस्तु का मूल स्त्रोत वह वास्तविक जीवन होता है, जिसे वह स्वयं जीता है और जिसे वह चारों ओर देखता-समझता है। इस सृष्टि का कल्पनाजगत् काल-सापेक्ष होता है और जो कार्य या व्यापार या घटनाएँ नाटककार चित्रित करता है उन्हें वह काल के विश्वसनीय परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न करता है। कला पूर्ण सफल तभी हो सकती है, जब वह काल्पनिक होते हुए भी सच्चाई का बोध कराये।

इन गुणों के साथ-साथ नाटक में उपकरणात्मक सन्तुलन का होना भी आवश्यक है। उपकरणात्मक सन्तुलन से तात्पर्य है कि घटना, कथावस्तु, पात्र तथा अन्य त-त्वों का आपसी सामंजस्य।

५.१.३ "रातरानी" में देश-काल और वातावरण का तात्विक विवेचन -

इसके अन्तर्गत कई सारे त-त्व आते हैं। जैसे कि राजनीतिक स्थिती, आर्थिक समस्याएँ, वर्ग संघर्ष, पारिवारिक समस्याएँ नारी समस्या, दहेज समस्या, बिघडते-बनते सम्बन्ध, नैतिक मूल्यों का अध:पतन, प्रकृति आदि तत्त्वों का विवेचन किया जायेगा।

५.१.३.१ " रातरानी " मे आधुनिक बोध -

प्रस्तुत नाटक में पचासोत्तरी परिवेश और व्यक्ति का द्वन्द्व उभरा है। यही इसमें आधुनिकता की पहचान है, जो " कुंतल " के माध्यम से उत्तरोत्तर और अधिक स्पष्ट होती लगती है। वह अपनी संस्कार-दीक्षा में अच्युत है। उसे मध्ययुगीन मूल्यजड़ता कहना असंगत होगा। समकालीन व्यक्ति ने न तो उसे पत्थरवत ढोया है और न वह उसके नीचे दबकर निष्प्राण ही हुआ है। उनकी समग्रता को अप्रासंगिक कहना आधुनिकता की प्रक्रिया की पहचान को धुंधला करना होगा। वह परंपरित जीवनबोध, मूल्य-मान्यताओं को प्रश्नित और परीक्षित करती है, उनकी समग्रता को अस्वीकार नहीं करती है। ऐसा करने से वह स्वयं अपनी पहचान खोने लगती है। स्पष्ट है कि

रातरानी को देश काल वातावरण की दृष्टि से परखा जाय तो उसमें आधुनिक बोध दिखाई देता है।

५.१.३.२ पारिवारिक समस्या -

आजकल पारिवारिक समस्याएँ अपना रूप दिन ब दिन बदल रही है। पहले परिवार सम्मिलित पध्दति के अनुसार रहते थे। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में परिवारों मे विघटन हो रहा है। रातरानी के अन्तर्गत भी नायक तथा नायिका के जीवन में परिवार में रहते हुए उनके अनेक बवंडर चले आते है। समाज तथा परिवार का नजदीक का नाता है, इसी वजह से समाज के में घटित अनेकविध कठिनाइयाँ परिवार की कठिनाई बन जाती है। और इससे परिवार जन त्रस्त होते है। उदाहरण के तौर पर जयदेव और कुंतल का परिवार समस्या से ग्रस्त प्रतित होता है।

५.१.३.३ विवाह समस्या -

वर्तमान परिस्थिति में विवाह एक समस्या के रूप मे उभर आया है। क्योंकि विवाह जैसे पवित्र और मंगलमय प्रसंगपर आजकल लोग झगडे पर उतर आते हैं। इसका कारण दहेज समस्या, अनमेल विवाह, अन्तर्जातिया विवाह आदि हो सकते है। प्रस्तुत नाटक की नायिका कुंतल भी दहेज की शिकार बनती है। पहले उसका विवाह प्रोफेसर निरंजनबाबू से तय हो चुका था, लेकिन निरंजन शादी के लिए राजी होते हुए भी उसके धर्मनिष्ठित कर्मठ पिता के कहने पर कुंतल की शादी टूट जाती है। कुंतल आधुनिक पीडित नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इसके साथ-साथ देश-काल और वातावरण की दृष्टि से प्रस्तुत नाटक में स्थित भूख समस्या, अर्थ समस्या, वर्ग-संघर्ष, महँगाई की

समस्या आदि बातोंको वर्तमान परिस्थिति के अनुसार लेखक ने चित्रित किया है।

५.२ " रातरानी " की भाषाशैली.

५.२.१ भाषा -

भाषा शैली नाटक का महत्वपूर्ण तत्व है। नाटक साहित्य सृजन के प्राथमिक काल में भाषा का इतना महत्व नहीं था। भाषा के बजाय विषयवस्तु को प्राधान्य दिया जाता था। आज-कल भाषा का अपना अलग स्थान है। भाषा के जरिए नाटककार पाठकों पर विशेष प्रभाव डाल सकता है। लेखक सामान्य सुलभ भाषा शैली द्वारा पात्रों की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। लेखक विशेष प्रभाव के लिए सामान्यत: साहित्यिक भाषा की त्याग बोलचाल की भाषा, अंचल विशेष की भाषा को अपनाता है।

डा. सुरेश सिन्हा का उपन्यास में भाषा के सृजन के बारे मे मत दृष्टव्य है - " प्रत्येक जीवन परिवेश की अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का अपना रूप होता है। परिवर्तन के इन सुत्रों को न पहचाना सकना अविवेकपूर्ण दुराग्रह है। जीवन परिवेश के बदल जानेपर भी जब हम उसी भाषा का प्रयोग करते रहते हैं, तो विडम्बनाएँ उत्पन्न होती हैं और मामूली सा कथ्य भी अविश्वसनीय या चौकनेवाला बन जाता है और वह हसमे कोई रिश्ता जोड नही पाता। कथ्य जितना ही प्रामाणिक होगा भाषा उतनी ही सहज होगी। " [१]

---

१. डॅा. सुरेश सिनहा, हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ-३९१,- ३९२

प्रस्तुत नाटक में डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल ने सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण भाषा को अपनाया है। इसके साथ ही उनके नाटक में सरल स्वाभाविक भाषा, प्रतीकात्मक भाषा तथा विविध शब्द, मुँहावरे, कहावते आदि का भी प्रयोग हुआ है।

भाषा के अन्तर्गत निम्नलिखित रूपों का अध्ययन आवश्यक है १. शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप, २. भाषासौंदर्य के साधन ३. प्रतीकात्मक भाषा ४. मुँहावरे,कहावते ५. वाक्य-विन्यास आदि।

५.२.१.१ <u>शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप</u>

नाटककार डा. लक्ष्मीनारायणलाल की भाषा पात्रानुकूल सूक्ष्म सांकेतिक प्रवाहपूर्ण है। इन्होंने उत्तरप्रदेश बोली के साथ ही देशी-विदेशी स्त्रोंतो से विविध प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे -

५.२.१.१.१ <u>तत्सम शब्द -</u>

प्रस्तुत नाटक के माली पात्र अशिक्षित है। इनकी भाषा अपने अंचल के अनुसार उत्तरप्रदेश लखनऊ मिश्रित हिन्दी है। फिर भी कुछ स्थानों पर तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे " मजमून, आत्मा, संकल्प, मनुआ, जन्म, दिन दु:ख, नख, मन, क्रोध दृष्टि,आकाश, निष्पाप, मानुषं आदि। "[१]

५.२.१.१.२ <u>तद्भव शब्द -</u>

इस नाटक में पात्रों की बोलचाल की भाषा में तद्भव

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल- रातरानी, पृष्ठ-३५

शब्दों की भरमार दिखाई देती हैं। जैसे -

" भगवान, आग, आँख, कान, नाक हाथ जलम, ताकना, दाँत, जीभ, गाँव, गाँठ, घर, अचरज, आँसू, सच, सूत, बहू, बूढा आदि। "[1]

५.२.१.१.३ देशज शब्द :

प्रस्तुत नाटक का परिवेश उत्तरप्रदेश होने के कारण लखनऊ लोकजीवन सामाजिक स्थिति का चित्रण किया गया हैं। इसमें उत्तरप्रदेश के शब्दों की बहुलता दिखाई दिती है। जैसे

" कुंजडा, मजमून, कायर, दाग, फूलदान, मीनाबाजार, मगज, मतलब, समाचार, बीमार, शराबी पत्ते आदि। -"[2]

५.२.१.१.४ विदेशी शब्द :

अरबी-फारसी

प्रस्तुत उपन्यास के कई पात्र अरबी फारसी शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे -

" इक्लाब, जुलूस, कुर्बान, तशरीफ, मुर्दाबाद, दहेज, मुमकीन, नौबत, जनाबे-अली, बादशाह, बेगम, कुर्सी, जिगर, खत, खामोशी, महज, मेहरबान, आदाबर्ज, कमरा, इतमीमान, इंतजार हडताल शामे-अवध, खामखाह, जिन्दाबाद, शादी, बेइज्जत, दुश्मन, नफरत, नजदीक, माहौल, जरुरत, मुसीबत आदि। "[3]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल — रातरानी, पृष्ठ - 35
२. वहीं पृष्ठ -
३. वहीं पृष्ठ -

अंग्रेजी शब्द :

" रातरानी " नाटक के पात्र शिक्षित होनेके कारण सुंदरम्, जयदेव, कुंतल, निरंजन आदि पात्र अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे -

" प्रेस, स्टाईल, टाई, प्रोग्राम, एक्जीक्यूटिव, प्रोग्रेस, प्रिंसिपल, डिप्टि, इंजीनियर, होस्टेल वार्डन , प्राक्टर, एकाउंट आफिसर, मिलिट्री, मशीन मैन, फोर मैन, होटल, एडवोकेट ट्रे, ब्लाइण्ड, कल्ट हसबैण्ड, वूमन, लब्ज, मीन्स, टयूशन, इन्स्टीटयूशन, इंडिवीजुअल, कॉलर, गार्डन, लॉ, टेप-रिकार्डर, कास्मोपॉलिट फोर ग्राउण्ड, बैंक, फ्लावर-वास्क, जॉब, मैनेजर, ब्लासम, भाई हार्ट विल, क्लिंग, आर्मफुल, ब्लूम, बियांड, पावर, एलॉग, बेल्स, गोल्डन, लाइक, थिंक नेम, इज, हंग, व्हेन आदि। "[1]

५.२.१.१.५ अन्य शब्द -

भाषा में सहज स्वाभाविकता और पात्रानुकूलता की दृष्टि से लेखक ने अन्य अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया हैं। जैसे

क. ध्वन्यार्थक शब्द :

१. " कुन्तल फफककर रोती हुई दिवान पर सिर टेक लेती है। "[2]
२. " हाय-हाय यह क्या कर रहे हो ? च...च...च..इस पर कैंची चला दी। "[3]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-८०,८१
२. वही पृष्ठ-११७
३. वही पृष्ठ-२५

ख. निरर्थक शब्द :

ये शब्द निरर्थक हैं, किन्तु भाषा में स्वाभाविक प्रवाह लाने की कोशिश में प्रयुक्त हुए हैं।

" खाली-पीली, अनाज-बनाज, वलाई, मौत, आत्मा फातमा, काम-वाम, ताला-वाला आदि। "[१]

आलोच्य नाटक में निरर्थक शब्दों की बहुलता दिखाई देती है। लेकिन नाटक के प्रवाह तथा रोचकता में बाधा नहीं निर्माण हुई।

ग. अपशब्द :

साहित्य में अपशब्द अवांछनीय होते हैं, किन्तु कभी-कभी पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ऐसे शब्द आवश्यक महसूस होते हैं। विशिष्ट सामाजिक, राजनीतिक, परिस्थिती में कथावस्तु में यथार्थता का अभास दिलाने के लिए तो कहीं पात्रो की विशिष्ट मनोवृत्ति उजागर करने के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया दिखाई देता हैं।

१. " बतदमीज "[२]
२. " मूरख "[३]
३. " हरामजादे "[४]
४. " बदमाश "[५]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायणलाल - रातरानी, पृष्ठ-३५
२. डा. लक्ष्मीनारायणलाल - रातरानी, पृष्ठ-६०
३. डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल - रातरानी, पृष्ठ-१०६
४. डा. लक्ष्मीनारायणलाल - रातरानी, पृष्ठ-१०७
५. डा. लक्ष्मीनारायणलाल - रातरानी, पृष्ठ-१०५

झ. द्विरुक्त शब्द :

भाषा के सौंदर्य में अभिवृध्दि लाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं किन्तु इनकी अतिशयता से भाषा प्रवाह में बाधा भी पहूँच सकती हैं। लेखक ने कहीं कहीं ऐसे शब्दों का प्रयोग "भाषा को सहज प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक बनाने के लिए किया हुआ दृष्टिगोचर होता हैं।

" हाँ-हाँ, हाय-हाय, पीछे-पीछे जाते-जाते, बहुत-बहुत, नहीं-नहीं, अलग-अलग, साफ-साफ, बस-बस, खड्डे-खड्डे, बाग-बाग, धीरे-धीरे, छि-छि, ऐसे-ऐसे, एक-एक, अच्छा-अच्छा, अभी-अभी आदि।"[1]

५.२.१.२ भाषा सौंदर्य के साधन :

किसी भी रचना की सार्थकता उसमें व्यक्त विचार और भावों को सहज-सुंदर और आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त करने में होती हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल के नाटककार अपनी अभिव्यक्ति को सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए भाषा के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करते आये हैं। अलंकारिक भाषा, प्रतीकात्मक भाषा, आवेशात्मक भाषा, सहज स्वाभाविक भाषा, पात्रानुकूल भाषा, मुहावरें-कहावतें, आदि। डॉ. लाल के आलोच्य नाटक में कुछ प्रमुख उपकरण सार्थकता के साथ प्रयुक्त हुए हैं।

---

१. १. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-३५

५.२.१.२.१ अलंकारिक भाषा -

नाटककारने अपनी अभिव्यक्ति को अधिक आकर्षक बनाने के लिए अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। इसमें विशेषण, अनुप्रास, उपमा आदि अलंकारों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान की हैं।

च. विशेषण

सुन्दरम, तेज कदम, मुग्ध भाव, सुखी हवा,

छ. उपमान

१. " तुम तो साक्षात् नन्दनवन की इन्द्राणी हो। "[१]
२. " वाह रे मेरी रातरानी "।[२]
३. " सुनो। मुझे तुम अपनी फुलवारी में नौकरानी रख लो न ।"[३]

ज. अनुप्रास

१. " लोगी मोल, लोगी मोल ?
तरल तुहिन वन उल्लास
लोगी मोल लोगी मोल
फैल गई मधुऋतु की ज्वाल
जल-जल उठती वन की डाल
कोकिल के कुछ कोमल बोल
लोगी मोल लोगी मोल। "[४]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-२९
२. वहीं पृष्ठ-30
३. वहीं पृष्ठ-30
४. वहीं पृष्ठ-३२

२. " देवो ने था । जिसे बनाया
देवो ने था जिसे बनाया । "[1]

३. " इसने स्वर्ग रिझाना सीखा
स्वर्गिक तान सुभाना सीखा । "[2]

५.२.१.२.२ प्रतीकात्मक भाषा :

प्रतिकों का सहारा लेकर गुढ तथ्यों को उभारा जाता हैं, आलोच नाटक का नामकरण ही प्रतीक रूप में किया है।

१. " सुनो...सुनो जब मैं हॉस्पिटल में थी और जिन दिनों मेरी तबीयत ज्यादा खराब थी उन दिनों रात के पिछले पहर जब मुझे थोडी सी नींद आ जाती थी तब मैं अक्सर एक ही सपना देखती थी...एक बडा सा सुनसान महल, जिसमें सुनहले कागज केफटे हुए पन्ने तेज हवा में चारों ओर उड रहे हैं। मैं उन उडते हुए फटे पन्नों का पीछा करती हुई सारे कमरों मे दौड रही हूँ, पर मेरे हाथ कुछ भी नहीं आता। फिर मैं एक बडे से हॉल कमरे में फुलों की सेज पर गिर जाती हूँ, वहाँ कभी गन्धराज, रातरानी, हिरना, रजनीगंधा की खूशबू का झोंगा आता, कभी सितार की झंकार, स्थर-मण्डल और बासुरी का मोहक संगीत और उसके बीच किसी मायावी की तेज हँसी । "[1]

२. " हमारी तरह ताश में केवल दो ही पत्ते नहीं होते, बीवी और बादशाह। अरे उसमें बावन पत्ते होते हैं, जिनमे सैकडों खेल और असंख्य चाले होती है,। तुम तो मेरी पत्नी हो - इस घर की लक्ष्मी।"[2]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-९७
२. डा. वही पृष्ठ-७३

५.२.१.२.३ आवेशात्मक भाषा :

ओजगुण से परिपूर्ण भाषा को आवेशात्मक भाषा कहते हैं। लेखक अपने नाटक में जुलूम अन्याय, अत्याचार का प्रतिरोध करने के लिए कहीं न कहीं ऐसे पात्रों का चयन करता हैं। उस पात्र की भाषा में आवेश झलकता हुआ दिखाई देता हैं। जैसे

१. " एक को माँ का प्यार मिला। और उससे उसके बाप-दादों को शक्ति मिली स्ट्राइक जिन्दाबाद "[१]

२. " बदतमीज कहीं के। तुम लोगों की यह हिम्मत । "[२]

३. " मालकिन इन्हें मना कीजिए.... ये अपनी जबान सम्हालकर बातें किया करें नहीं तो...... ।"[३]

इस प्रकार " रातरानी " नाटक में आवेशात्मक भाषा झलकती है।

५.२.१.२.४ पात्रानुकूल भाषा :

नाटककार ने नाटक को प्रभावपूर्ण और प्रवाहमय बनाने के लिए तथा इसके साथ-साथ चरित्र विशेष के व्यक्तित्व को उभारने के लिए पात्रानुकूल भाषा का चुनाव किया है।

१. " मालिक ने खुद मुझे लिखना-पढ़ना सिखाया, मेरे लिये गुरुबानी संतपोथी ला-लाकर देते थे। सच भगवान से बड़े थे वे मेरे लिए ।"[४]

माली अशिक्षित होने कारण उनके मुख से निकलती हुई भाषा देहाती है, उपर्युक्त वाक्य द्रष्टव्य है।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायणलाल – रातराणी, पृष्ठ-२४
२. वहीं पृष्ठ-६0
३. वहीं पृष्ठ-६0
४. वहीं पृष्ठ – ५२

२. " तुम्हारे सिध्दान्त अपने हैं - अपने जीवन से प्राप्त पर इस घर का सिध्दान्त वही पुरातन है। माली बाबा हमारा नौकर नहीं है। इस परिवार का पूज्य सदस्य है। यह बगीचा यह फुलवारी इस घर का मंदिर है और माली उसका पुजारी।"[१]

३. " यदि यह भाव समाज में दृढ जाये तो फिर शरीर सुख का जो आडम्बर बांधा जाता है, उसके सुख-साधनों के लिए जो इतना अमंगल कर्म, छल प्रपंच करना पडता है।"[२]

४. " देखो, तुम प्रेस के मामलों में बेकार दखल मत दिया करो। तुम्हारी समझ ही क्या है ।"[३]

५.२.१.२.५ सहज स्वाभाविक भाषा

प्रस्तुत नाटक मे जगह-जगह पर सहन स्वाभाविक भाषा का चयन दृष्टव्य है। जैसे -

१. " ऐसी बात क्या है ? मै तो तुम्हें ऐसे ही अपने संग लिये चली आयी कुन्तल... कुन्तल...."[४]
२. " जी, वह घटना मालूम है मुझे।"[५]
३. " तुम लोग यहाँ से जाते हो कि नहीं।"[६]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-५३
२. वहीं पृष्ठ-५४
३. वहीं पृष्ठ-५४
४. वहीं पृष्ठ-५५
५. वहीं पृष्ठ-४३
६. वहीं पृष्ठ-६०

५.२.१.२.६ मुहावरे कहावते :

भाषा को सजीव और प्रभावशाली बनाने के लिए तथा भाषा में पांडित्य लाने के लिए मुहावरे कहावतों का प्रयोग किया जाता हैं। इसका प्रयोग किया जाता हैं। इसका प्रयोग अर्थबोध को देखकर किया दिखाई देता हैं।

ब. मुहावरें :

" ढाई मन का सिर हिलाना, गला रुंध जाना, आँखो में आंसु छलकना, दसो उंगलिया घी में जाना, आँखो चुराना, लोट-पोट हो जाना, हाथापाई की नौबत आना, दफनाए हुए मुर्दे को फिर से उघाडना आदि।"[१]

क. कहावतें :

" बिन धन होय न आदर इसलिए बिना रुपये पाँव न रखो घर से बाहर "[२]

इस प्रकार " रातरानी " नाटक में विविध प्रकार के वाक्यों का प्रयोग मिलता हैं। छोटे और सरल वाक्यों के साथ इनकी भाषा में नाटकीयता, चुटीलापन होने के कारण इसकी भाषा सार्थक बन गयी हैं। इसमें लखनऊ मिश्रित हिन्दी का अधिक्य दिखाई देता है। पात्र ज्यादातर शिक्षित होने के कारण भाषा मे शुध्दता की भरमार दिखाई देती है। फिर भी भाषा पर लेखक की गहरी पकड दिखाई देती है।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ - ११४
२. वहीं पृष्ठ - २४

५.२.२ शैली :

डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र के अनुसार " वास्तव में भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा हैं, और इस माध्यम के प्रयोग की रीति या विधी शैली हैं।"[1]

शैलियाँ के कई प्रकार है, मगर आलोच्य नाटक में विवरणात्मक शैली व चेतनाप्रवाह या पूर्व दिप्ति शैली, नाटकीय शैली, व्यंग्यात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली आदि शैलियाँ प्रमुख रूप से आयी हुई दिखाई देती है ।

५.२.२.२ विवरणशैली :

हिन्दी नाटकों के प्रारंभ से इस शैली का प्रयोग होता आ रहा हैं। यह शैली परम्परागत हैं। इसमें वातावरण निर्मिती की जाती है । लेखक जगह जगह पर विवरणात्मक शैली की प्रस्थापना करता रहता है, जैसे -

१. "बायी ओर के दरवाजे से जयदेव का प्रवेश -भुरे रंग का सूट पहने हुए आकर्षक पुरूष अवस्था पैंतीस वर्ष से अधिक नहीं । कमरे मे प्रविष्ठ होते ही कुन्तल के गीत की स्वरलहरी में जैसे बंध जाता हैं।........सहसा जयदेव अपनी मीठी खाँसी से अपनी उपस्थिती बताना चाहता हैं ।"[2]

२. " वसंती रंग की बनारसी साडी में कंधे पर कामदार शाल डाले हुए। जूडे में गुलाब का सफेद पुष्प लगाए।...चौखट की ओर बढकर माली को पुकारती है।"[3]

---

१. डा. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ-३४
२. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-२२
३. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-८६

५.२.२.२ चेतनाप्रवाह या पूर्वदिप्ति शैली :

पूर्वदिप्ति या फ्लैश बॅक शैली में जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति तरंगो के रूप मे होता हैं। आलोच्य नाटक में चेतनाप्रवाह या पूर्वदिप्ति शैली इसप्रकार दृष्टव्य हैं -

१. " इंजीनियर साहब स्वर्गवास से दो घंटा पहले मुझे अपने सिरहाने बिठाकर बोले " साधू बाबा। बाग और फुलवारी देखना, अब मैं निंदा ले रही हूँ। मैं मालिक का पैर थामकर रोने लगा मॉं। तब मालिक बोले रोता क्यों है रे साधू। "[१]

२. " मॉं, आठ वर्ष का जब मैं था तभी गुरूमुख हो गया फिर माता-पिता का स्वर्गवास हुआ और मेरे मनुआ ने बनवास ले लिया। इधरउधर घूमता रहा। एक बार ऐसा हुआ मॉं कि कार्तिक के महीने में मैं गोंडा से लखनऊ वाली सडक थामे सरजू नदी नहाने जा रहा था। सुबह का समय था। उसी सडक से इंजीनियर साहब घोडे पर चढ्ढे चले जा रहे थे। घोडा चलते चलते बिगड गया, सो मालिक छोडा नहीं। मुझे लखनऊ ले आये -खूब खिलाया -पिलाया और इसी फुलवारी में मुझे छोड दिया। "[२]

५.२.२.३ नाटकीय शैली :

नाटकों का प्रभाव एवं गति की तीव्रता लाने के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है। पात्रों के भावात्मक स्थिती को इस शैली में अभिव्यक्त किया जाता है।

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-२८
२. वहीं पृष्ठ-५१

१. " हाँ, तो "

" तो वहाँ तुमने कुछ खत लिखे थे । "

" हाँ लिखे थे.... निरंजन बाबू को, जिनसे मेरी शादी तै हुई थी ।......क्यों, क्या बात है ? "

" कुछ नहीं । "

" पर खत की यह बात तुमसे किसने कही ? "

"क्यों क्या हो गया ? "

" पर यह तुमसे किसने कहा "[१]

२. " देखते नहीं, प्रेस में स्ट्राइक चल रही है । "

"क्यों चल रही हैं ? मालिक जब तक थे, तब तो ऐसा नहीं होता था । "

" तो सारा दोष मेरा है । "

" पता नहीं । "

" चलो भोजन कर लो "

" तुम बहुत नाराज हो, कुन्तल ?

"नहीं । अन्दर चलो । उठो भोजन ठंडा हो रहा है

" क " माने कुन्तल "

" और " ज " माने । "

"माई डार्लिंग । "[२]

3. " अजब भेंट हो गयी यह । "

" अजब क्यों ? "

" क्या पता था । "

" एक बात कहूँ क्षमा कीजियेगा न । "

" कुछ आप कहिए भी तो भला । "

" आपकी सहेली जो हैं । "[3]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-४६

२. वहीं पृष्ठ-४५

3. वहीं पृष्ठ-५८

५.२.२.४ व्यंग्यात्मक शैली :

व्यंग्यात्मक शैली में नफरत, इर्ष्या आदि भावनाओं को तथा मजाकपूर्ण ढंग से हृदय को ठेंस पहुँचनेवाली बातों का जिक्र किया जाता है। प्रस्तुत नाटक में व्यंग्यात्मक शैली के उदाहरण दृष्टव्य है।

१. " सच, जब से नौकरी में आयी हूँ, तब से ऐसे ऐसें लोगों को देखा है कि जी करता है एक एक की नकल किसी चौराहे पर खड़ी होकर उतारु।"[1]

२. " मैं और ब्याह ? क्या करुं कही किसी पुरुष ने इतनी तपस्या ही नहीं की है।"[2]

३. "हमारे मालिक है कि हमी से झूठ बोलते हैं... हमी से अपनी आँखे चुराते हैं।"
पर फल हम क्या करेंगे। इसमें मजदूर का पेट नहीं भर सकता।"[3]

४. " यही एक तरीका रह गया है आपके पास...यथारथ से भागते का यही चरित्र है आपका ?"[4]

५.२.२.५ प्रतीकात्मक शैली :

जिन भावों को प्रकट करने में कठिणाई होती हैं उन्हें सहज एवं प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मक शैली का विकास हुआ

" मेरे आँचल में केसर का वह पुष्प डालो।"[5]

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ- ३१
२. वहीं पृष्ठ- ३१
३. वहीं. पृष्ठ- ६२
४. वहीं पृष्ठ- ६३
५. वहीं पृष्ठ- ११८

२. " अरे, उसमें बावन पत्ते होते हैं, जिनमें सैकड़ों खेल और असंख्य चालें होती है। तुम तो मेरी पत्नी हो - इस घर की लक्ष्मी।"[१]

३. " मुकद्दर हो तो ऐसा हो। ओह! ऐसा गार्डन। यह फुलवारी। यह आर्चेड! ओह, तुम तो साक्षात नन्दनवन की इन्द्राणी हो!"[२]

४. "जय को इस फुलवारी में सिर्फ रातरानी पसन्द है वे जब बहुत खुश होते हैं तो मुझे "रातराणी" कहकर पुकारते हैं।"[3]

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप मे हम कह सकते हैं कि देश काल और वातावरण की दृष्टि से 'रातरानी' नाटक काफी सफल रहा है। क्योंकि स्वातंत्र्योत्तर काल मे जनता अपने मन में तय कर चुकी थी कि, अब हम सुखी होंगे। लेकिन परिस्थिती उलटी हो गयी। हमारे देश में जाति पाति दहेज, वर्गसंघर्ष, विवाह, पारिवारिक समस्या आदि बातों को लेकर झमेला, पैदा हुआ। और इसका नाटककार ने बड़ी खूबी के साथ चित्रण देश काल और वातावरण को साक्षी मानकर किया हैं। देश, काल वातावरण को साक्षी मानकर किया है। देश, काल वातावरण की दृष्टि से लाल को आलोच्य नाटक में काफी सफलता मिली है

---

१. डा. लक्ष्मीनारायण लाल - रातराणी, पृष्ठ-७३
२. वहीं पृष्ठ-२९
३. वहीं पृष्ठ-30

भाषाशैली की दृष्टि से लेखक ने प्रभावपूर्ण रोचक एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने नाटक में शब्दप्रयोगों के विभिन्न रूपों को अपनाया हैं। माली पात्र अशिक्षित हैं। अतः उनके बोलचाल मे कुछ स्थानों पर अश्लिलता का अभास मिलता है। फिर भी कथानक के विकास में कोई बाधा नहीं निर्माण होती। भाषा को सौंदर्य प्रदान करने के लिए विशेषण उपमानों के साथ साथ मुहावरें, कहावतों का भी प्रयोग किया है। भाषा के अनेक रूपों के साथ विविध शैलियों को भी अपनाया है। अतः डा. लक्ष्मीनारायण लाल प्रस्तुत नाटक की भाषा शैली की दृष्टी से सफलता पा चुके हैं।